समकालीन कहानी : समसामयिक सामाजिक यथार्थ

डॉ. लूनेश कुमार वर्मा (व्याख्याता)
शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छछानपैरी
विकास खंड–अभनपुर, जिला रायपुर (छत्तीसगढ़)
मो. 8109249517
luneshverma@gmail.com

सारांश– समकालीन कहानियों में तत्कालीन विविध संदर्भों एवं मुद्दों के आधार पर परिवर्तित हो रहे समाज की संरचना का मार्मिक व रोचक चित्रण किया गया है । प्रगतिशील कहानीकारों ने सामाजिक यथार्थ को केंद्र में रखकर यथार्थ जीवन के अनछुए पहलुओं पर गाँव, देहात, कस्बे, नगर, महानगर और दूरस्थ अंचलों के जीवन संदर्भों पर अत्यंत मार्मिक और प्रभावशाली कहानियाँ लिखी हैं । बाजारवाद, भूमंडलीकरण एवं पूँजीवाद के कारण निम्न मध्यमवर्गीय आदमी का जीवन हास्यास्पद हो गया है । उपभोक्तावादी संस्कृति में व्यक्ति के स्थान पर वस्तु महत्वपूर्ण हो जाती है । समकालीन कहानीकारों की कहानियों में समकालीन जीवन प्रवाह को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था पर तीखा प्रहार करते हुए उनकी कमजोरियों को उजागर करती हैं । कहानियों में व्यवस्था के प्रति असंतोष व विद्रोह का स्वर प्रमुखता से उभरा है ।

मुख्य शब्द– समकालीन कहानी, सामाजिक यथार्थ, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, पूँजीवाद, उपभोक्तावाद, विद्रोह का स्वर ।

समकालीन कहानियों में तत्कालीन विविध संदर्भों एवं मुद्दों के आधार पर परिवर्तित हो रहे समाज की संरचना का मार्मिक व रोचक चित्रण किया गया है । इसके साथ ही कहानी की संरचना में हो रहे परिवर्तन को समसामयिक सामाजिक यथार्थ को रचनात्मक रूप दिया गया है । विविध तकनीकों के कारण आम आदमी का जीवन तेजी से बदल रहा है, ऐसे में समाज और आम आदमी के जीवन की जटिलताओं को इस समय की कहानियों में, नए शिल्प में, कथात्मक रूप में अभिव्यक्त किया गया है । समाज की बदलती हुई संरचना को कथा में सार्थक अभिव्यक्ति देने के लिए विविध सूचनाओं, घटनाओं, आंकड़ों, सर्वेक्षणों आदि का उपयोग करते हुए कहानी को आकार दिया गया है ।

प्रगतिशील कहानीकारों ने सामाजिक यथार्थ को केंद्र में रखकर यथार्थ जीवन के अनछुए पहलुओं पर गाँव, देहात, कस्बे, नगर, महानगर और दूरस्थ अंचलों के जीवन संदर्भों पर अत्यंत मार्मिक और प्रभावशाली कहानियाँ लिखी हैं । उदय प्रकाश की 'तिरिछ', 'छप्पन तोले का करधन', '...और अंत में प्रार्थना' और स्वयं प्रकाश की 'बर्डे' कहानियों में सामाजिक यथार्थ का नया स्वरूप देखने को मिलता है ।

समकालीन हिंदी कहानी में समकालीन स्थितियों का व्यापक चित्रण किया गया है । बाजारवाद, भूमंडलीकरण एवं पूँजीवाद के कारण निम्न मध्यमवर्गीय आदमी का जीवन हास्यास्पद हो गया है । समकालीन कहानी में उदय प्रकाश की तिरिछ, राम सजीवन की प्रेम कथा, पॉल गोमरा का स्कूटर, पीली छतरी वाली लड़की, संजीव की अपराध आदि कहानियाँ प्रमुख हैं । सुरेंद्र चौधरी कहते हैं– "**दरिद्र–वंचित और बीमार अनुभव करने वाले कथानायकों की कमी उदय प्रकाश की कहानियों में नहीं है ।**"[1] उदय प्रकाश की कहानियों के प्रमुख पात्र समाज के दलित, दमित, वंचित वर्ग के हैं ।

समकालीन समय में उदय प्रकाश की प्रारंभिक कहानियों में 'टेपचू' व 'तिरिछ' अत्यंत महत्वपूर्ण व चर्चित कहानियाँ हैं। 'टेपचू' में जादूई यथार्थवाद का पहले पहल प्रयोग देखने को मिलता है। 'हीरालाल का भूत' कहानी के प्रमुख पात्र हीरालाल शोषित किसान वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र है। इस कहानी में बंधुआ मजदूरी जैसी पुरातन प्रथा पर लेखक ने प्रहार किया है।

उपभोक्तावादी संस्कृति में व्यक्ति नहीं केवल और केवल उपभोक्ता महत्वपूर्ण होता है। इसमें व्यक्ति के स्थान पर वस्तु महत्वपूर्ण हो जाती है। इसका उद्देश्य विज्ञापन आदि के माध्यम से ग्राहकों का निर्माण कर जिस किसी प्रकार से लाभ प्राप्त करना होता है। इन्हीं भावनाओं को पंकज बिष्ट की कहानी 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते', उदय प्रकाश की कहानी 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में रेखांकित किया गया है। 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी का कथ्य–शिल्प दोनों बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज के समय में लोग किस तरह से मतलब परस्त हो गए हैं। इसे व्यक्त करते हुए पॉल गोमरा का स्कूटर कहानी में लेखक कहते हैं– "**मैंने पहली बार तुमसे अपने किसी काम के लिए रुकने को कहा है और तुम इसमें भी बहाने बना रहे हो, जबकि तुम्हारे लिए मैं हर रोज एवरेज तीन–चार घंटे खाली बैठा रहता हूँ। जहाँ तुम्हारा मन आता है, तुम मेरा स्कूटर ले जाते हो, मैंने कभी मना नहीं किया...।**"[2] कहानी का नायक निम्न मध्यवर्गीय है। वह आज के उत्तर आधुनिक युग में बाजारवाद के चकाचौंध से आकर्षित हो न केवल अपना नाम अपितु अपना जीवन शैली बदलने के लिए उद्यत हो जाता है।

उदय प्रकाश प्रगतिशील कथाकार हैं। उदय प्रकाश की रचनाओं में मानवीय संवेदना की अभिव्यक्ति प्रभावशाली है। समकालीन समाज की स्थितियों का यथार्थ चित्रण उदय प्रकाश ने समाज से प्रतिबद्ध होकर अपनी रचनाओं में किया है। रचना में यथार्थ का महत्वपूर्ण स्थान होता है। उदय प्रकाश कहते हैं–''कोई भी महत्वपूर्ण रचना सिर्फ सामाजिक यथार्थ के शरीर और उसकी प्रत्यक्ष आवयविक बनावट को ही नहीं, बल्कि यथार्थ की आत्मा को भी अभिव्यक्त करती है।''[3] भूमंडलीकरण और बाजारवाद ऐसे कारण हैं, जिनके कारण व्यक्ति के स्वत्व, अस्तित्व नष्ट होने की स्थिति उत्पन्न हो गई है।

समकालीन कहानीकारों की कहानियों में समकालीन जीवन प्रवाह को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था पर तीखा प्रहार करते हुए उनकी कमजोरियों को उजागर करती हैं। व्यवस्था के विविध क्षेत्रों जैसे– शासन–प्रशासन, न्याय, पुलिस, शिक्षा आदि क्षेत्रों में व्याप्त भ्रष्टाचार व विसंगतियों को उजागर करते हुए आम आदमी के मन में असंतोष की दहकती हुई भावनाओं को अपनी कहानियों के माध्यम से नई दिशा देने का प्रयास समकालीन कहानीकारों की कहानियों में हुआ है। इनकी कहानियों में आम आदमी के शोषण का यथार्थ चित्रण के साथ उनमें संघर्ष की शक्ति का संचार करने वाली ऊर्जा का भी समावेश निहित है।

समसामयिक समाज में गंभीर व घातक प्रभाव उत्पन्न करने वाले कारकों जैसे बेरोजगारी, असमानता, पूँजीवाद का चित्रण 'दुर्गंध', 'आवेदन करो', 'मोहन राम (दास) आखिर क्या हुआ', 'टुंड्रा प्रदेश', 'हल' जैसी कहानियों में किया गया है। बढ़ती हुई आबादी के कारण और लोगों की आपाधापी के कारण देश में यातायात व्यवस्था चरमरा जाती है। 'आवेदन करो' कहानी के माध्यम से पंकज बिष्ट कहते हैं– "देखते नहीं क्या, ट्रैफिक किस कदर जाम है? एक तो मर ही रहा है, क्या तुम चाहते हो, इन्हें एंबुलेंस कुचल दे? अरे, जब ट्रैफिक चलेगा एंबुलैंस भी आ जायेगी। अजीब बेवकूफ मिल जाते हैं।"[4] पंकज बिष्ट की कहानियों में आपातकाल के कारण जन जीवन में आए बदलाव, धीरे–धीरे गाँधीवादी विचारधाराओं व आदर्शों से बढ़ती हुई दूरी, उपभोक्तावाद के कारण उत्पन्न होने वाली त्रासदियों और सांप्रदायिकता के कारण उत्पन्न होने वाली जटिलताओं का समग्र चिंतन पंकज बिष्ट की कहानियों में समाहित हैं।

'खोखल' और 'कवायद' कहानियाँ पंकज बिष्ट के आपातकालीन त्रासद अनुभवों पर आधारित है। आपातकाल में भय व घुटन का वातावरण व्याप्त था। बलराज पांडेय कहते हैं– **"पंकज बिष्ट ने जनवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति फैंटेसी के माध्यम**

से दी है । 'खोखल' एक फैंटेसी है, जिसमें मानव मुक्ति के लिए पागल जैसे हो जाने वाले व्यक्ति का चित्रण किया गया है । मानव–मुक्ति के रास्ते में कौन–कौन से खतरे हैं तथा इस समय अभिव्यक्ति का संकट कितना गहरा होता जा रहा है, इसका लेखक ने प्रभावकारी ढंग से बयान किया है । लेखक का मानना है कि जीवन की सच्चाइयों से भागकर अधिक दिनों तक नहीं रहा जा सकता। एक–न–एक दिन उसका सामना करना ही होगा ।"[5] 'खोखल' कहानी में आपातकालीन इसी आतंक को चित्रित किया गया है । इस कहानी के नायक को ऐसा प्रतीत होता है, मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो। कहानी का नायक इस अनुभव से उबर नहीं पाता है ।

समकालीन कहानीकार जनवादी चेतना से युक्त रचनाकार हैं । वे प्रतिबद्ध कहानीकार हैं । इन कहानीकारों में अपने समय के आम आदमी के सामाजिक जीवन की सहज पहचान और यथार्थ की गहरी अनुभूतियाँ मिलती हैं । ये कहानीकार मानवीय संबंधों को लेकर विचारशील रहते हैं । ये अपने समय व समाज के प्रति प्रतिबद्ध रचनाकार हैं । अतः इनकी कहानियों में मानवीय संबंधों को विशेष महत्व देने की प्रवृत्ति देखने को मिलती है । कहानियों में व्यवस्था के प्रति असंतोष व विद्रोह का स्वर प्रमुखता से उभरा है । भाषा आम आदमी की भाषा है । कहानियाँ सरल, सहज व बोधगम्य हैं ।

संजीव जनवादी विचारधारा के लेखक हैं । संजीव की लिखी कहानियों में नक्सलवाद पर आधारित 'अपराध' महत्वपूर्ण कहानी है । इस कहानी के विषय में बलराज पांडेय कहते हैं– "**अपराध कहानी पर नक्सलवाद का सीधा प्रभाव है, हालांकि यह एक बुद्धिजीवी के अपराधबोध और पश्चाताप की कहानी बन गई है । इस कहानी में जिस आक्रोश के साथ वर्तमान व्यवस्था पर प्रहार किया गया है, वह ज्यादा महत्वपूर्ण है ।"**[6] 'अपराध' कहानी के माध्यम से लेखक ने देश की न्याय व्यवस्था पर एक टिप्पणी की है ।

न्याय की आशा से लोग कचहरी आते हैं । न्याय व्यवस्था के मंदिर कचहरी में झूठ, फरेब और दलाली की गतिविधियों से लेखक उद्वेलित होता है । उन्हें लगता है अपराधी लोग ही यहाँ निरपराध को दंड देने का काम करते हैं । यहाँ की पुलिस, जज, कलेक्टर, मंत्री आदि वास्तविक अपराधी हैं, जो देश की जनता को विभिन्न रीतियों से लूटने का कार्य कर रहे हैं । लेखक को लगता है वास्तव में जिन्हें दंड मिलना चाहिए, वे सत्ता सुख भोग रहे हैं और न्याय के लिए आवाज उठाने वाले सचिन और संघमित्रा जैसे सामान्य लोगों को यातना दे–दे कर मार दिया जाता है । कहानी में समाज के तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग की सोच को भी लेखक रेखांकित करते चलते हैं ।

'अपराध' कहानी का प्रमुख पात्र सचिन अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करता है । लड़ते–लड़ते उसे फाँसी की सजा हो जाती है, लेकिन वह झुकता नहीं है । वह वीर व साहसी योद्धा की तरह अपने सिद्धांतों के मार्ग पर अडिग रहता है । कहानी में सचिन को दी जाने वाला फाँसी जन सामान्य के मन में वर्तमान व्यवस्था के प्रति आक्रोश उत्पन्न करती है । वह कहता है– "**मुझे इस पूँजीवादी, प्रतिक्रियावादी, न्यायव्यवस्था में विश्वास नहीं है । आम जनता भी जिसे न्याय का मंदिर कहती है, वह लुटेरे, पंडों और जूताचोरों से भरा पड़ा है । यहाँ आते ही चपरासी, अहलमद, नाजिर, पेशकार, कानूनगो से लेकर काला लबादा ओढ़े वकील और गीता तथा गंगाजल की कसमें खाकर झूठी गवाहियाँ देने वाले गवाह, ये तमाम कुत्ते नोचने–खसोटने लगते हैं उसे। यह लाल थाने, लाल जेलखाने और लाल कचहरियाँ... इन पर कितने बेकसूरों का खून पुता है । वकीलों और जजों का काला गाउन जाने कितने खून के धब्बों को छुपाए हुए हैं । परिवर्तन के महान रास्ते में एक मुकाम ऐसा भी आएगा जिस दिन इन्हें अपना चरित्र बदलना होगा, वरना इनकी रोबीली बुलंदियाँ धूल चाटती नजर आएँगी।"**[7] अदालत में जब सचिन को प्रस्तुत किया जाता है तब अदालत में दिया गया उसका बयान वर्तमान न्याय व्यवस्था का कच्चा चिट्ठा खोलता है ।

समकालीन समाज में जन्मदिन मनाने की परंपरा प्रचलित है । स्वयं प्रकाश की कहानी 'बर्डे' में पाश्चात्य संस्कृति के फलस्वरूप निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में अपने पुत्र के दो जन्मदिन मनाने के भिन्न भिन्न प्रकार के अनुभवों का चित्रण किया गया है । कहानी में जब सुधीर फोर्समेंट इंस्पेक्टर था तब अपने पुत्र के जन्मदिन मनाने पर ढेरों और तरह–तरह के उपहारों से उनका घर भर गया था । स्वयं प्रकाश कहते हैं– **"यही बात है । यही बात है, जो हर साल महिलाओं को बच्चों की वर्षगांठ मनाने के लिए उत्साहित कर देती है । थकेंगी, खटेंगी, झुंझला लेंगी, सब कर लेंगी, लेकिन जब अपने व्यंजन दूसरों का खिलाएँगी और दूसरे वाह–वाह कर उठेंगे...कैसा सुख मिलता है । और खासकर जब वे मँहगे–मँहगे उपहार भी दे जा रहे हों!"**[8] स्वयं प्रकाश 'बर्डे' कहानी के माध्यम से निम्न मध्यवर्गीय समाज में लोगों की जन्मदिन मनाने की मानसिकता को स्पष्ट करते हैं । जब सुधीर इंस्पेक्टर की नौकरी छोड़ कॉलेज में लेक्चरर हो गया, तब अपने बच्चे के जन्मदिन मनाने पर बहुत ही छोटे–छोटे और मामूली उपहार प्राप्त हुए थे । छोटे–छोटे उपहारों को देखकर उसकी पत्नी श्रीमती बैजल के मनोभावों का बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से चित्रण किया गया है ।

समकालीन कहानीकारों की कहानियों में मानवीय संबंधों को लेकर चिंता की रेखाएँ स्पष्ट देखी जा सकती हैं । तकनीक और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विकास के कारण आम आदमी के जनजीवन पर इन सब का व्यापक प्रभाव पड़ा है । फलतः इन रचनाकारों ने आम आदमी के जीवन में इन तकनीकों के कारण होने वाले प्रभाव–दुष्प्रभाव को रेखांकित किया है । समाज के प्रत्येक वंचित वर्ग के लोगों की पीड़ा व शोषण के विरुद्ध स्वर बुलंद किया गया है । इनकी कहानियों में समाज के प्रत्येक वंचित वर्ग जिसमें अनुसूचित जाति जनजाति दलित स्त्री आदि समाहित हैं । इनके प्रति पूरी सहानुभूति से इनका पक्ष लेते हुए पूरी संवेदना से इनकी पीड़ा और समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से उठाया गया है ।

निष्कर्ष– समकालीन कहानियों में देश के सामान्य लोगों और उनके जीवन के संघर्ष, हर्ष–विषाद, उथल–पुथल और अत्यंत साधारण समझी जाने वाली स्थितियों–परिस्थितियों का जीवंत चित्रण व विश्लेषण सरलता व सहजता से किया गया है । समकालीन जीवन का विश्वसनीय चित्रण देखने को मिलता है । कहानियों में संरचना, रूप–शिल्प को लेकर विविध प्रयोग देखने को मिलते हैं । यह प्रयोग जटिल से जटिलतर होते जा रहे यथार्थ की पहचान व उसकी पुनर्रचना के लिए यथार्थ से जादुई यथार्थ तक की यात्रा के रूप में सामने आता है । समकालीन कहानियों में ग्राम्य जीवन का यथार्थ व जीवंत चित्रण हुआ है, कहानियाँ विचार प्रधान हैं । पात्रों में शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की अदम्य जिजीविषा देखने को मिलती है । समकालीन कहानी का कथ्य संवेदना और शिल्प भिन्न प्रकृति का था । इन कहानियों में शिल्प का अभिनव प्रयोग देखने को मिलता है ।

संदर्भ ग्रंथ

1. चौधरी, सुरेंद्र. हिंदी कहानी: रचना और परिस्थिति. गाजियाबाद: अंकिता प्रकाशन. संस्करण: 1999.
2. उदय प्रकाश. पॉल गोमरा का स्कूटर. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. संस्करण: 2006.
3. उदय प्रकाश. ईश्वर की आँख. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. संस्करण: 2005.
4. बिष्ट, पंकज. बच्चे गवाह नहीं हो सकते. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन. संस्करण: 1986.
5. पांडेय, बलराज. कहानी आंदोलन की भूमिका. इलाहाबाद: अनामिका प्रकाशन. संस्करण: 1989.
6. पांडेय, बलराज. कहानी आंदोलन की भूमिका. इलाहाबाद: अनामिका प्रकाशन. संस्करण: 1989.
7. संजीव. शताब्दी की कालजयी कहानियाँ(खंड 4). संपादक– कमलेष्वर. नईदिल्ली: किताबघर प्रकाशन. संस्करण: 2010.
8. स्वयं प्रकाश. चर्चित कहानियाँ. नई दिल्ली: सामयिक प्रकाशन. संस्करण: 2005.